अध्ययन सामग्री
बी.ए. पार्ट 3
प्रश्नपत्र - पंचम
डॉ० मालविका तिवारी
सहायक प्रोफेसर
संस्कृत विभाग
एच.डी. जैन कॉलेज
वी.कुं. सिं. वि० , आरा

कठोपनिषद् -

कठोपनिषद् के आधार श्रेय एवं प्रेय का विवेचन करें

सृष्टिकर्ता की सभी सृष्टियों में मानवसृष्टि सर्वोत्कृष्ट है। मानव अधिक बुद्धिसम्पन्न होता है तथा औचित्यानौचित्य का विचार विवेकपूर्वक करने की क्षमता रखता है। लेकिन दुर्भाग्य यह है कि सांसारिक भोग विलास की सामग्रियों की चमत्कृति एवं प्रबल आकर्षणता उसे अपनी ओर आकृष्ट कर ही लेती है तथा उससे मुक्ति पाने में वह पूर्णतः सफल नहीं हो पाता। ब्रह्म या आत्मा के अस्तित्व का ज्ञाता होता हुआ भी मानव भोगविलास की सामग्रियों के पीछे प्रमत्त के सदृश अहर्निश दौड़ता रहता है। लेकिन जिस व्यक्ति में वस्तुओं की वास्तविकता को सम्यक् रूप से आँकने की क्षमता हो जाती है वह जन्म-मरण के चक्र से सर्वदा के लिए मुक्त हो जाता है तथा परमात्मा पद को प्राप्त कर लेता है।

कठोपनिषद् में यम-नचिकेता संवाद के माध्यम से उपर्युक्त तथ्य को प्रस्तुत किया गया है। यमराज नचिकेता के समक्ष भोगमय प्रेय मार्ग को प्रस्तुत करता है, लेकिन विवेकी नचिकेता श्रेय मार्ग का ही अनुसरण करता है।

श्रेय-मार्ग को विद्या एवं प्रेय-मार्ग को अविद्या के नाम से अभिहित किया जाता है। श्रेय कुछ और है तथा प्रेय कुछ और। इन दोनों के बीच कोई तालमेल नहीं, कोई सामञ्जस्य

नहीं। लेकिन ये दोनों विभिन्न प्रयोजन वाले होते हुए भी पुरुष को बाँधते हैं। इनमें से श्रेय का ग्रहण करने वाले का कल्याण होता है तथा जो प्रेय का वरण करता है वह पुरुषार्थ से पतित हो जाता है। श्रेय एवं प्रेय अर्थात् विद्या एवं अविद्या को हम दैनिक जीवन से उदाहरण देकर सम्यक् प्रकार से समझ सकते हैं। अविद्या उस रमणी के सदृश है जो मनोहारी आभूषण से विभूषित होकर अठखेलियाँ करती हुई मनुष्य के समक्ष उपस्थित होती है। वह दिव्य सेविकाएँ, रथ, महल एवं सांसारिक भोग विलास के नन्दन उपवन की घटा से घिरी रहती है। उसके सौन्दर्य तथा साजसज्जा को देखकर मूढ़ व्यक्ति हठात् उसके प्रति आकृष्ट होकर उसके चंगुल में सर्वदा के लिए फँस जाता है। परिणामतः उसके बन्धन से मुक्ति पाना मनुष्य के लिए अत्यन्त दुष्कर हो जाता है। लेकिन विद्या उस रमणी के सदृश है जो तपस्विनी के भेष में मनुष्य के समक्ष उपस्थित होती है। विवेकहीन व्यक्ति उसको देखकर उसके प्रति तनिक भी आकृष्ट नहीं होता, क्योंकि उसका शरीर आभूषणों एवं साजसज्जा की जगह पर मृगचर्म से आच्छादित रहता है। उसके केश-पाश में पक्षियों के घोंसले दृष्टिगत होते हैं तथा उसकी भुजाओं में कपाल एवं वैराग्य के ग्रन्थ सुशोभित होते रहते हैं।

विवेकहीन व्यक्ति अविद्या रूपी रमणी में अहर्निश अनुरक्त रहकर अक्षय सुख की उपलब्धि की कामना करता है, लेकिन उसका परिणाम अत्यन्त भयावह एवं कष्टप्रद होता है। वस्तुस्थिति तो यह है कि सुवर्णालंकारादि से सुसज्जित अविद्या रूपी रमणी मनुष्य को शनैः शनैः नरक के गर्त में धकेलती जाती है। अविवेकिता के कारण अविद्या रूपी रमणी में अनुरक्त व्यक्ति भ्रमवशात् अपने को धीर, गम्भीर एवं महान् पण्डित समझता है। लेकिन वास्तविकता तो यह है कि उसका पतन ठीक उसी

प्रकार होता है जिस प्रकार एक अन्धे के द्वारा निर्दिष्ट मार्ग का व्यापन करने वाले दूसरे अन्धे का विनाश होता है —

अविद्यायामन्तरे वर्तमानाः स्वयं धीराः पण्डितं मन्यमानाः।
दन्द्रम्यमाणाः परियन्ति मूढा अन्धेनैव नीयमाना यथान्धाः॥

अविद्या रूपी रमणी के क्रोड में शयन करने वाला व्यक्ति उसके मादक सौन्दर्य पाश में फँसा रहकर अपना सर्वस्व खो बैठता है। उसके लिए परलोक प्राप्ति के सारे साधन काले नाग-से प्रतीत होते हैं। उसकी दृष्टि परलोक पर जाती ही नहीं। उसकी दृष्टि में इसी लोक की एकमात्र सत्ता है, परलोक नाम की कोई वस्तु ही नहीं है। इस प्रकार का अविवेकी पुरुष भवचक्र के बन्धन से कदापि मुक्त नहीं होता। वह बार-बार जन्म ग्रहण करता तथा मृत्यु को प्राप्त करता रहता है।

इसके ठीक विपरीत श्रेय-मार्ग अर्थात् विद्या रूपी रमणी का सेवक सांसारिक भोगविलास तथा विषय वासनाओं की तिलांजलि दे देता है। उसमें सांसारिक वस्तुओं की वास्तविकता को परखने की अद्भुत क्षमता होती है। इसका एकमात्र कारण उसकी विवेकशीलता है। जिस प्रकार नीरक्षीर विवेकी हंस जल का परित्याग कर दूध को ग्रहण कर लेता है, उसी प्रकार श्रेय मार्ग का व्यापन करने वाला व्यक्ति अपनी बुद्धि से औचित्यानौचित्य का पूर्णरूपेण विचार कर औचित्य का ग्रहण एवं अनौचित्य का परित्याग कर देता है। वह अच्छी तरह समझता है कि सांसारिक भोगों से उपलब्ध सुख क्षणभंगुर है तथा इन्द्रियों की शक्ति को विनष्ट करने वाला होता है। वस्तुतः श्रेय-मार्ग अत्यन्त कण्टकाकीर्ण है। इसका व्यापन करनेवाला व्यक्ति अपनी सभी इन्द्रियों को योगसाधना से अपने वश में कर लेता है। वह अपने मन की चंचलता को एकाग्रता में परिणत कर देता है तथा सर्वदा पवित्र आचरण करता है। वह वैराग्यमार्ग

का अनुगमन कर परमात्मा पद को प्राप्त कर लेता है तथा भवचक्र से सर्वदा के लिए मुक्ति पा जाता है।

कठोपनिषद् में रथ-रूपक के माध्यम से श्रेय एवं प्रेय को अत्यन्त सरलतापूर्वक समझाया गया है। मनुष्य के शरीर को रथ, आत्मा को रथी, बुद्धि को सारथी तथा इन्द्रियों को अश्व तथा मन को लगाम के रूप में कल्पित किया गया है +

आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथमेव तु।
बुद्धिं तु सारथिं विद्धि मनः प्रग्रहमेव च॥

बुद्धिरूपी सारथी के कारण ही शरीररूपी रथ व्यवस्थित ढंग से चलकर आत्मारूपी रथी को परम गन्तव्य स्थान तक पहुँचा देता है। वस्तुतः इन्द्रियरूपी अश्वों को विषयभोगरूपी हरी-हरी घासों से आकृष्ट होकर मार्गच्युत होने की हर सम्भावना रहती है। लेकिन बुद्धिरूपी सारथी शरीररूपी रथ का संचालन अत्यन्त दक्षता से करता है। अतः प्रमुख तत्त्व बुद्धि ही है। यदि बुद्धिरूपी सारथी सांसारिक विषय-भोग की मदिरा में झूमकर रथ का संचालन करे तो मनरूपी लगाम उसके वश में कदापि नहीं रहेगा। परिणामतः इन्द्रियरूपी अश्व विषयभोग के आकर्षण में मार्गच्युत होकर रथ एवं रथी दोनों को ही पतन के गर्त में गिरा देंगे।

रथ-रूपक की कल्पना के द्वारा तीन रहस्यों का उद्घाटन होता है। इसका प्रथम रहस्य तत्त्वों की सूक्ष्मता का प्रतिपादन करता है। इसके द्वारा इन्द्रियों पर विषयों की श्रेष्ठता विषयों पर मन की श्रेष्ठता तथा मन पर बुद्धि की श्रेष्ठता की स्थापना की गयी है। बुद्धि को सारथी के रूप में कल्पित किया गया है। लेकिन बुद्धि से भी सूक्ष्म तत्त्व महत् तत्त्व है, उससे सूक्ष्म अव्यक्त तथा अव्यक्त से भी सूक्ष्म परम पुरुष या ब्रह्म है। यही परब्रह्म तत्त्वों की अन्तिम सीमा है। इसी

सीमा को प्राप्त करने के लिए रथी को रथ की आवश्यकता होती है। श्रेय-मार्ग का अवलम्बी ही उक्त तत्वों की सूक्ष्मता को भली-भाँति समझता है तथा परम लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल होता है। रथ-रूपक की कल्पना का दूसरा रहस्य श्रेय एवं प्रेय मार्ग के परिणाम की विवेचना करता है। श्रेय मार्ग का अवलम्बी परम लक्ष्य मोक्ष को अत्यन्त सरलता से प्राप्त कर लेता है लेकिन प्रेय मार्ग का गन्ता अविवेकी एवं प्रमादी होने के कारण पूर्णतः विनष्ट हो जाता है। रथ-रूपक की कल्पना का तीसरा रहस्य आत्मा के भोक्तृत्व का प्रतिपादन करता है। वस्तुतः आत्मा सुख-दुख का भोक्ता नहीं है।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि श्रेय या विद्या का उपासक कल्याण को प्राप्त करता है तथा प्रेय या अविद्या का उपासक सम्पूर्ण पुरुषार्थ से पतित हो जाता है। प्रेय मार्ग के पथिक को कदापि शान्ति नहीं मिलती। धीर तथा विवेकी व्यक्ति ही श्रेय मार्ग का वरण करता है तथा अविवेकी प्रेय मार्ग का।